Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

Sanju Devi :Baba Mastnath University , Asthal Bohar, Rohtak

भारत–चीन संबंध : चुनौतियाँ एवं भविष्य की राह

शोध सार:

प्रस्तुत शोध भारत–चीन संबंधों में चुनौतियों के साथ सहयोग पर अध्ययन किया जाएगा। भारत एवं चीन एशिया की महान सभ्यताओं में से दो हैं। निकट भविष्य में दुनिया की महाशक्ति बनने के लिये दोनों ही देश प्रबल है। दोनों देश विश्व की एक बड़ी जनसंख्या और तेज गति से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था वाले देश है। भारत–चीन ने अपने संबंधों को मजबूत बनाने के लिए सांस्कृतिक, राजनेतिक और आर्थिक संबंधों को फिर से स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। आर्थिक परिदृश्य से चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश बनकर उभरा है। क्योंकि भारत–चीन से वर्तमान में व्यापारिक तौर पर द्विपक्षीय संबंध बहुत महत्वपूर्ण हो गए हैं।

भारत–चीन 21वीं सदी की उभरती हुई दो महान शक्तियाँ है।

प्राचीन काल से 1957 तक दोनों देशों के बीच में शांति, सहयोग और मित्रतापूर्ण संबंध रहे है, लेकिन 1962 युद्ध में तिब्बत को लेकर दोनों देशों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

वर्तमान में भारत– चीन के संबंध आर्थिक एवं व्यापारिक रूप से बहुत अधिक मजबूत हो गए है। इस संदर्भ में दोनों देशो के संबंधों की सभी प्रवृत्तियों की जाँच करना महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द :– भारत, चीन, चुनोतियाँ, भविष्य, व्यापारिक, सहयोग, अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना :– वर्तमान में भारत–चीन संबंध एक नए पड़ाव पर है, इस शोध पत्र में भारत–चीन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया जाएगा। भारत–चीन एशिया के दो बड़े देश हैं। दोनों ही देश आज के समय में दुनिया की बड़ी महाशक्ति एवं बड़े बाजार बनने की ओर तत्पर है। यद्यपि दोनो देशों के संबंधों मे अनेक उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है, चीन तिब्बत एवं अरुणाचल प्रदेश के मुद्दे को लेकर भारत के सामने चुनौतियाँ पैदा करता रहा है। वह भारत के अरुणाचल प्रदेश पर दावा करता है, और इस प्रदेश

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

को अपने अधिकार क्षेत्र में लेना चाहता है, अनेक प्रयासों के बावजूद भी दोनों देशों के सम्बन्ध सामान्य नही हो सके हैं।[1] चीन पाकिस्तान का खुलकर साथ देता है, जिस कारण भारत की आम जनता पाकिस्तान के साथ–साथ चीन को बड़ी चुनौती मानते है। चीन ने अपनी साम्राज्यवादी (विस्तारवादी) नीति के तहत अपनी पैठ हिन्द महासागर में भी बड़ा ली है। भारत चीन की विस्तारवादी नीति का विरोध करता है। वन बेल्ट वन रोड (OBOR) की नीति जो प्राचीन सिल्क रन्ट (रेशम मार्ग) के नाम से जानी जाती है, चीन द्वारा उसका निर्माण करना, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्री लंका, म्यामार व मालद्वीप के बन्दरगाहो से प्राप्त विभिन्न सुविधाएँ चीन की अपने पडोसी देशों के साथ प्रत्यक्ष पहुँच को हिन्द महासागर तक बना देती हैं।[2]

सामरिक रूप से भारत के लिये यह एक चुनौती प्रस्तुत करती हैं, एक ओर भारत के चीन के साथ सामरिक, राजनीतिक संबंध बहुत अच्छे नहीं है, लेकिन आर्थिक रूप से दोनों देशों के व्यापारिक संबंध अधिक मजबूत हुए हैं। विभिन्न विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भारत–चीन के सम्बन्ध वर्तमान में काफी अच्छे कहे जा सकते हैं। क्योंकि चीन आने वाले समय में भारत का बहुत बड़ा व्यापारिक भागीदार हो जायेगा और आर्थिक रूप से दोनों देशों की आत्मनिर्भरता बढ़ती चली जायेगी। इसके अतिरिक्त भारत–चीन विश्व की अनेक समस्याओं में सहयोग कर रहे हैं जैसे– ऊर्जा, पर्यावरण की सुरक्षा, वैश्विक स्वास्थ्य व विश्व आर्थिक व्यवस्था के विकास का समाधान करने में, दोनों देश सहयोग दे रहे हैं।[3]

आज चीन–भारत संबंध अनेक चुनौतियो के होते हुए भी नए पड़ाव में, सहयोग कर रहे हैं। दोनों देशों के संबंध सहयोग के साथ चुनौतिपूर्ण हो गए हैं।

राजनीतिक संबंध

भारत और चीन एशिया की बहुत बड़ी जनसंख्या वाले देश है। भारत–चीन के साथ 1 अप्रैल 1950 को राजनयिक संबंध स्थापित किए थे। भारत पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने वाला पहला गैर–समाजवादी देश बन गया था। 1954 में चीन द्वारा तिब्बत पर अपना अधिकार स्थापित करना और दलाई

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

लामा का अपने 14 हजार साथियों के साथ भारत में शरण लेना भारत–चीन संबंधो में तनाव का मुख्य कारण बना।[4] कुछ वर्षो के पश्चात वर्ष 1962 में चीन द्वारा भारत पर युद्ध करना, भारत–चीन के मध्य सीमा संघर्ष की शुरुआत करना। दोनों देशों के संबंधों के लिये एक गहरा झटका था। 1962 के युद्ध उपरान्त भारत ने चीन के साथ कोई भी राजनायिक संबंध नहीं बनाया, परंतु वर्ष 1988 में राजीव गाँधी की ऐतिहासिक चीन यात्रा ने दोनों देशों के साथ संबंधो को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[5]

2003 में भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा के दौरान दोनों देशो के बीच आम सहमति बनी कि चीन भारत, कश्मीर के विरुद्ध कोई भी अनावश्यक अवरोध पैदा नही करेगा।[6]

चीन वर्तमान समय में अपनी विस्तारवादी नीति पर बहुत अधिक जोर दे रहा है, तिब्बत पर अधिकार, वन बेल्ट वन रोड की नीति एवं हाल में 'ताइवान पर अपना अधिकार रखना व उस पर कब्जा करने की नीति चीन की साम्राज्यवादी नीति का एक हिस्सा है। चीन भारत को सामारिक धरातल पर ही नही बल्कि रणनीतिक व आर्थिक धरातल पर भी घेरने का प्रयास कर रहा है।[7]

चीन की विस्तारवादी नीति ने भारत के लिए दीर्घकालीन खतरा पैदा कर दिया है।

चीन भारत की सीमाओं के पास सामरिक जाल बुनने का कार्य बहुत वर्षो से कर रहा है। हिमालय की तराई में बसे देशों के बीच सड़क और रेलवे लाइनों का निर्माण करना, चीन द्वारा भारत को चारों ओर से घेरने की कोशिश की जा रही है।[8]

हिंद–प्रशांत महासागर में चीन ने अपनी पैठ बनाई हुई हैं, चीन के काश्गर और पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद को जोड़ने वाले काराकोरम हाइवे की लंबाई 1300 कि० मी० है। इस राजमार्ग को **"फ्रेंडशिप हाईवे"** का नाम दिया गया है पिछले कुछ वर्षो में चीन ने इस हाईवे को 10 मी० से 30 मी० तक बढ़ा लीया है, चीन ऐसा इसलिए कर रहा हैं, ताकि युद्ध एवं संधर्ष के समय में सेना और सैन्य सामान को एक जगह से दूसरी जगह आसानी से पहुँचाया जा सकें।[9]

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

हाल के कुछ वर्षो में चीन के सामरिक विस्तार को समझते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत ही उसका प्रमुख लक्ष्य है। चीन भारत को अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंदी के रूप में देखता हैं। इसलिए चीन भारत को कमजोर करने की कोशिश में लगा रहता है। चीन के सरकारी पत्र **"पीपुल्स डेली"** में यह कहा गया हैं कि "भारत किसी भी तरह चीन का मुकाबला नही कर सकता।" एक दूसरे पत्र– "चाइनीज विश्लेषक दा वींग ने यह माना कि संभवतः भारत और चीन के बीच युद्ध न हो लेकिन शीत युद्ध की गर्मी युद्ध का माहौल तैयार कर सकती हैं।[10]

आर्थिक संबंध

प्राचीन ऐतिहासिक समय से ही भारत–चीन के साथ आर्थिक संबंध पुराने **"रेशम मार्ग"** के ही रहे हैं, भारत–चीन वर्तमान के वन बेल्ट वन रोड़ (OBOR) जिसे प्राचीन समय में **"रेशम मार्ग"** कहा जाता हैं उससे व्यापार करते थे, चीन इस मार्ग को दोबारा विकसित करने की कोशिश **"वन बेल्ट वन रोड"** (OBOR) रणनीति के तहत कर रहा है। भारत–चीन ने 1984 में एक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके अनुसार उन्हें **"मोस्ट फेवर्ड नेशन"** का दर्जा प्रदान किया गया। हाल के कुछ वर्षों में भारत–चीन के मध्य द्विपक्षीय व्यापार में लगातार बढ़ोतरी हुई। भारत–चीन ने तमाम मामलों में राजनीतिक असहमति, विवादों के चलते भी आर्थिक संबंध और अधिक मजबूत हो गए हैं। 2001 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2.32 बिलियन डॉलर था, जो 2010–11 में बढ़कर 61.74 बिलियन डॉलर हो गया हैं। वर्तमान में चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार देश है, व्यापार के संबंध में यह चिंता की बात है कि भारत–चीन का 10वां सबसे बड़ा साझेदार देश है।[11]

भारत–चीन सस्ती वस्तुओं जैसे– दवाओं, बिजली के उपकरण, ऊर्जा उत्पादन, अधिकतर इलेक्ट्रानिक सामान, अधिक मात्रा में फार्मा (ड्रग इंग्रीडिएटंस) और ऑटो पार्ट का (कंपोनेट) भी आयात करता है। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की रिपोर्ट 2011 के अनुसार स्थिति यह है, कि भारत द्वारा दूरसंचार उपकरणों का 62% चीन से आयात करना पड़ती है।

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

भारत को इस संबंध में चीन पर निर्भरता कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है।

इस रिपोर्ट के आलोक में भारत ने घरेलू इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद व सेमी कंडक्टर उद्योगों को बढ़ाने की नीति अपनाई ताकि इस क्षेत्र में चीन पर निर्भरता को कम किया जाए तथा आत्मनिर्भरता को प्राप्त किया जा सकें।

2008 में चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक पड़ोसी देश बन गया था। 2014 में चीन ने भारत में 116 बिलियन डॉलर का निवेश किया। 2018–19 व्यापार में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार करीब 88 अरब डॉलर रहा। यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है, कि भारत पहली बार चीन के साथ व्यापार को 10 अरब डॉलर तक कम करने में सफल रहा।

2020–21 में चीन, भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया, लेकिन कोविड – 19 की महामारी के चलते 2020–21 में संपूर्ण व्यापार में 32.46 फीसदी की गिरावट हुई।[13] जिसकी तुलना में केवल 15 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई।

जून 2020 के बीच में गलवान घाटी की घटना ने चीनी वस्तुओं के बहिष्कार का आध्बन किया। आर्थिक संबंधो का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है, कि चीन द्वारा बहुत अधिक मात्रा में पूंजी का निवेश भारत में किया गया हैं। आंकड़ों के अनुसार 2009 में चीन 29.6 बिलियन डॉलर का पूंजी का निवेश किया। उसकी तुलना में भारत ने 2008 में चीन के साथ 426 योजनाओं में केवल 898 मिलियन डॉलर का पूंजी निवेश किया हैं। जो चीन की तुलना में बहुत कम निवेश है।[14]

सांस्कृतिक संबध :–

भारत–चीन के बीच सांस्कृतिक संबंध प्राचीन काल से हीं विद्यमान रहे है। दोनों देशों की प्राचीन संस्कृति बहुत ही गौरवशाली रही हैं। चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान का एक लंबा इतिहास रहा हैं।

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

प्राचीन समय में चीन के साथ संबंध अधिक प्रबल बौद्ध धर्म के काल में हुए थे, प्राचीन भारत से ही बौद्ध धर्म को चीन में लाया गया था।

इसके पश्चात बौद्ध धर्म की जड़े चीन में फैलने लगी। बौद्ध धर्म कब चीन में आया इस पर विद्वानों के विचारों में भिन्नता हैं।[15]

विश्वसनीय ऐतिहासिक रिकॉर्ड के अनुसार 4 वीं सदी के दौरान बौद्ध तीर्थयात्री और विद्वानों ने पुराने ऐतिहासिक **''रेशम मार्ग''** के माध्यम से चीन की यात्रा की। इस तरह कई चीनी यात्री जैसे– इत्सिंग का हल्यात और ध्वेनसांग आदि भारत की यात्रा पर आए।

चीन के प्रसिद्ध विद्वान ची श्येनलिन के अनुसार ''बौद्ध धर्म भारत से सीधे–सीधे चीन में नहीं आया। बल्कि मध्य एशिया में कुछ पुरानी जातियों के लोगों के माध्यम से चीन में आया हो सकता है।

भारत के दो महाकाव्य **'महाभारत'** और **'रामायण'** में चीन के बारे में उल्लेख मिलता है। महाभारत में चीन के धोड़े और सैनिकों के बारे में जानकारी मिलती हैं। इसके अतिरिक्त **'रामायण'** और **'मनुस्मृति'** में भी चीन के बारे में उल्लेख किया गया हैं।[16]

वर्तमान में भी भारत–चीन सांस्कृतिक आदान–प्रदान देखने को मिलता है। दीर्घकालीन समय में चीन–भारत संबंधों में तीव्र गति से विस्तार हुआ है। दोनों देशों ने विभिन्न मुद्दों पर सहयोग को बहुत महत्व दिया हैं। जिसमें जन दर जन संपर्क हमारे द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसी साझी समझ के साथ दिसंबर 2010 में चीन के प्रधानमंत्री बने जियाबाओं की भारत यात्रा के समय में भारत–चीन के नेता सांस्कृतिक संपर्को का एक संग्रह तैयार करने की परियोजना पर सहमत हुए। इस संग्रह का अनुवाद अंग्रेजी और चाइनीज दोनों भाषाओं में किया गया है। दोनों देशों के उपराष्ट्रपति द्वारा 30 जून 2014 को बीजिंग में किया गया। इस संग्रह में 700 से अधिक प्रविष्टिया हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

जिनमे दोनों देशों के बीच व्यापार, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक क्षेत्रों में संपर्क के साथ आदान–प्रदान के समृद्ध इतिहास का वर्णन किया गया है। अतः हम समझ सकते हैं कि भारत–चीन का इतिहास 2 हजार वर्ष पुराना होने के बाद भी वर्तमान में भी इसकी प्रासंगिता उतनी ही बनी हुई हैं।

भारत–चीन सीमा विवाद

भारत–चीन के संबंध प्राचीन काल में बहुत अधिक मधुर रहे हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने हिंदी चीनी भाई–भाई को अधिक महत्व दिया। परंतु 1959 में चीन ने तिब्बत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस दौरान दलाई लामा अपने 14 हजार सैनिको के साथ में भारत में शरर्णागत हो गए। जिस कारण चीन–भारत को अपना विरोधी मानने लगा और 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। 1962 के युद्ध में चीन ने भारत को हरा दिया और अक्साई चीन पर कब्जा कर लिया। चीन भारत के पूर्व में स्थित अरुणाचल प्रदेश को अपने नक्शे में दर्शाता हैं और उसको अपना राज्य मानने का दावा करता है, परंतु भारत द्वारा इसका समय–2 पर विरोध किया जाता है।[17]

चीन द्वारा प्रकाशित मानचित्रों में न केवल नेफा (NEFA North East Frontier Agency), भूटान एवं लद्याख, कश्मीर के क्षेत्र को अपने भू–भाग के रूप में दिखाता है।

चीन के साथ सीमा पर तनाव बना रहता है, क्योंकि चीन भारत के हजारों किलोमीटर हिस्सों पर अपना दावा करता हैं, पूर्वी लद्दाख में चीन ने जून 2020 में गलवान घाटी में हिंसक झडप हुई। गलवान घाटी लद्दाख और अक्साई चीन के बीच स्थित है, यहाँ पर LAC (Line of Actual control) दोनों देशों को अलग करती है यह घाटी चीन के दक्षिण गिन्जियांग और भारत के लद्दाख तक फैली हुई है।

LAC के नजदीक सभी राज्यों पर चीन अपना दावा करता हैं। वर्तमान में भारत गलवान घाटी में सड़क बना रहा है, जिसका नाम दारबुक–श्योक–दौलत बैग ओलडी रोड हैं। यह सड़क भारत–चीन LAC के लगभग नजदीक 9 कि० मी० की दूरी पर है।[18]

Cover Page
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

डोकलाम (भूटान) :—

डोकलाम का क्षेत्र वैसे तो भूटान में पड़ता हैं लेकिन यह सिक्किम सीमा के पास लगता है। यहां चीन के साथ वाद—विवाद होता रहता है, यह एक ट्राई जंक्शन है, जहां से चीन, भारत और भूटान की सीमाएं नजदीक पड़ती हैं। भूटान और चीन इस क्षेत्र पर अपना दावा करता है।

भारत चीन का विरोध करता है और भूटान का समर्थन करता है, इसलिए भारत का चीन के साथ डोकलाम में विवाद चलता रहता है।

तवांग (अरूणाचल प्रदेश) बौद्ध धर्म का धार्मिक स्थल है, यहां एशिया का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। चीन इस क्षेत्र पर अपना दावा करता है और इसे तिब्बत का क्षेत्र मानता है। परंतु यह क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश में पड़ता है लेकिन चीन की नजरे हमेशा इस क्षेत्र पर रहती है। 1914 में शिमला समझौता हुआ था, तब तंवाग को अरुणाचल प्रदेश का हिस्सा मान लिया गया था। 1962 के युद्ध में चीन ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था, लेकिन युद्ध के बाद उसे अपना कब्जा छोड़ना पड़ा।[19]

नाथुला दर्रा हिमालय का एक पहाड़ी क्षेत्र हैं यह भारत के सिक्किम और दक्षिणी तिब्बत की चुम्बी घाटी को आपस में जोड़ता है। नाथुला को लेकर भारत—चीन के बीच कोई विवाद नहीं है, लेकिन यहां पर कभी—कभी भारत—चीन सेनाओं में झड़प की खबरे आती रहती है।

सहयोग के साथ तनाव का संबंध

21वीं सदी में एशिया को एक विश्व केंद्र के रूप मे देखा जा रहा है। क्योंकि भारत—चीन दोनों देशों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत—चीन के बीच में सीमा विवाद के साथ ही सहयोग के संबंध भी हैं। सांस्कृतिक संबंध जो कि बहुत प्राचीन हैं दोनों देशों में सहयोगात्मक स्थिति बनी हुई हैं। भारत—चीन दोनों देश BRICS, SCO (शंघाई सहयोग संगठन) इन्वेस्टमेट बैक जैसे न्यू डैवलपमेंट बैंक, एशियन इन्फ्रास्टक्चर सबसे महत्वपूर्ण संगठनों में सहभागी है।

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

भारत–चीन जलवायु परिवर्तन मुद्दों पर दोनों देश एक दूसरे के साथ हैं, क्योंकि दोनों देश विश्व की एक बड़ी आबादी वाले देश हैं और तीव्र गति से विकसित होने वाले राष्ट्र है दोनों देश जलवायु परिवर्तन मुद्दो की चुनौती में सहयोग कर रहे हैं।

चीन–भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चुनौती देता है वह भारत को वीटो देने के मुद्दे पर विरोध करता है। यह मुख्य रूप से तनाव का एक मुख्य कारण है ।[20]

वर्तमान में भारत की दक्षिण एशिया के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती भूमिका, नाभिकीय सैन्य क्षमता में चीन के साथ प्रतिस्पर्धा तथा आर्थिक स्तर पर बढ़ता महत्व चीन के साथ तनाव का एक मुख्य कारण है। अतः मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि भारत–चीन दोनों देशों में तनाव के साथ सहयोग के आधार निर्मित हो रहे हैं।

निष्कर्ष

भारत–चीन दोनों ही देश एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। यद्यपि प्राचीन काल में भारत–चीन संबंध अच्छे रहे, नेहरू काल में भारत–चीन संबंध अच्छे चलें, क्योंकि नेहरू एक आदर्शवादी नेता थे, वे चीन को अपना आदर्श पड़ोसी मानते थे, लेकिन चीन द्वारा तिब्बत पर अधिकार एवं 1962 के युद्ध ने नेहरू को गहरा झटका दिया। परंतु वर्तमान में स्थिति यथार्थवादी हैं, भारत की स्थिति पहले जैसी नही रही। भारत की विदेश नीति निडर एवं आत्मनिर्भर हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। कोविड–19 महामारी के समय भारत ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए, जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की बहुत सराहना हुई। 21वीं सदी में भारत–चीन संबंध जहां विवादित रहे वही दूसरी ओर दोनों देश एक दूसरे का सहयोग करते भी देखे गए, हाल में भारत–चीन के बीच गलवान घाटी में 2020 में दोनों देशों की सेनाओं के बीच हिंसक झड़प हुई। इसके बाद दोनों देशों में तनाव की स्थिति बनी हुई थी, लेकिन हाल ही में लद्दाख क्षेत्र में लंबे समय से भारत–चीन सीमा के बीच चल रहे गतिरोध को सुलझाने में बड़ी कामयाबी मिली है भारतीय और चीनी सैनिकों ने डोगरा हॉट स्प्रीग्स पी पी 15 से पीछे हटना शुरू कर दिया। दोनों देशों में आपसी सहमति 8 सितम्बर 2022 को यह

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

मूव बॅक सेक्शन (move back action) भारत–चीन कोर कमांडर की 16 वें दौर की बैठक में आपसी सहमति के बाद निर्णय लिया गया। पी पी 15 (पेट्रोलिंग पौइंट) के अलाव बहुत सारे विवादित क्षेत्र है जहां पर तनाव बना रहता है।

भारत–चीन सीमा विवाद को सुलझाने के लिए आपसी सहमति एवं बातचीत का होना आवश्यक है, क्योंकि दोनों पड़ोसी देश के लिए जहाँ व्यापारिक संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण हो गए हैं अगर सीमा विवाद को सुलझाने में सफल होते है, तो दोनों देश एशिया की बड़ी अर्थव्यवस्था व महाशक्ति बन सकते हैं।

End Note

- शौरी अरूण, भारत–चीन संबंध : सबक जो चीनियों ने हमें सिखाए और हम सीखना ही नही चाहते, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
- कुमार रविन्द्र, भारत–चीन संबंध : अतीत और वर्तमान, आकृति प्रकाशन, दिल्ली, 2021
- द्विवेदी कुमार अशोक, भारत–चीन सम्बधों की गति : चुनौतियाँ एवं अवसर, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012
- वही।
- गुप्त मानिक लाल, भारत–चीन कूटनीतिक संबंध, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2019
- भारत–चीन संबंध– चुनौतियाँ और उभरते मुद्दे, 'द हिन्दू', 14 अक्टूबर 2019
- वही।
- वही।
- भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती चीनी उपस्थिति : पर बातचीत, 'द इंडियन एक्सप्रेस, 17–12–2019, 12:25:56 पूर्वाद्ध
- वही।
- भारत–चीन आर्थिक संबंध, म्यंक बदानी, 5 सितम्बर 2020
- पंतो हर्ष वी भारत–चीन संबंध, 9 जुलाई 2012, ORF ओ० आर० एफ०
- विदेश मंत्रालय भारत सरकार MEA.gov.in भारत–चीन राजनीतिक संबंध 1 अप्रैल 1950 भारतीय दूतावास : बीजिंग की वेबसाइट : अगस्त 2015
- समशानी सुमंत, भारत–चीन आर्थिक गठबंधन पर गलवान का प्रभाव, ओ० आर० एफ०, 11 फरवरी 2021
- शुइड़ वाङ, चीन–भारत सांस्कृतिक आदान–प्रदान, भूमिका क्रिमेशन्स, नई दिल्ली, 2018
- वही।

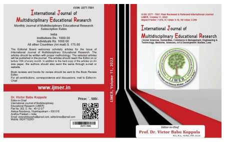
Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(6), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.112
www.ijmer.in

- भारत सैनी गुरप्रीत, भारत–चीन सीमा विवाद : अक्साई चीन से अरुणाचल तक, बीबीसी संवाददाता, 21 मई 2020
- वही।
- वही।
- यादव आर० एल०, भारत की विदेश नीति, डॉलिंग किंडर स्ले, नई दिल्ली, 2013

संदर्भ ग्रंथ

1. विदेश मंत्रालय भारत सरकार mea.gov.in 21वीं सदी में भारत–चीन कार्यकलापों की संभावनाएं एवं चुनौतियाँ, 12 फरवरी 2011, न्यूयार्क
2. भारत–चीन के संबंधों पर निर्भर करेगा एशिया का भविष्य, एस० जयशंकर, जी हिन्दुस्तान, 30 अगस्त 2022, 12:04AM
3. अरुणाचल में चीन के साथ क्या है सीमा विवाद? भारत के किन–किन इलाकों पर हैं ड्रैगन की नजर, आज तक प्रियंका द्विवेदी, नई दिल्ली, 18 मई 2022, 7:48 AM
4. एस० आर० यादव, ''भारत की विदेश नीति'', 2013, डॉर्लिग किंडरस्ले, नई दिल्ली
5. चीन–भारत सांस्कृतिक आदान प्रदान, भूमिका क्रियेशन्स शूइड वाड ''लीला कुंज'', सी–37 बाली नगर, नई दिल्ली, 2018
6. कुमार अशोक द्विवेदी, ''भारत–चीन सम्बन्धों की गति चुनौतियाँ एवं अवसर'', राधा प्रकाशक, 2012
7. भारत–चीन संबंध चुनौतियाँ और उभरते मुद्दे, ''दी हिन्दू, 14 अक्टूबर 2019
8. वाजपेयी अरुण, ''समकालीन विश्व एवं भारत प्रमुख मुद्दे और चुनोतियाँ''
9. भारत–चीन आर्थिक गठबंधन पर गलवान का प्रभाव, सुमंत समक्ष ORF, 11 फरवरी 2021
10. विदेश मंत्रालय भारत सरकार रिपोर्ट, भारत–चीन सांस्कृतिक संपर्को का संग्रह 30 जून 2014